E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 13-12-2023
Accepted: 17-02-2024

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 2; Issue 2; 2024; Page No. 357-361

शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि की उनकी निम्न और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में तुलना का अध्ययन

[1]Rekha Uniyal and [2]Dr. Meenu Verma

[1]Research Scholar, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India
[2]Assistant Professor, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India

Corresponding Author: Rekha Uniyal

सारांश

शिक्षा को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली मानव यात्रा के नाम से जाना जाता है। यह समाज को एकीकृत एवं संगठित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, तथा व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में सहायक होती है। किसी भी राष्ट्र या समाज में जो उन्नति परिलक्षित होती है, वह उस राष्ट्र अथवा समाज की शिक्षा का प्रतिफल मानी जाती है। यह व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली साधन है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने नागरिकों के समुचित विकास के लिये शिक्षा प्रक्रिया का उपयोग करता है जिससे उसके नागरिक अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन सफलतापूर्वक कर सकें। शिक्षार्थी के शैक्षणिक परिणामों को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाना मुश्किल है। पिछले शोधों से पता चलता है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि संस्थान, समाज, पारिवारिक वातावरण, व्यक्तित्व, रचनात्मकता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रेरणा आदि जैसे कई चर द्वारा तय की गई है। हमें उन और क्षेत्रों का पता लगाना चाहिए जो शिक्षार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को तय करते हैं, ताकि हम उन्हें उचित तरीके से उनकी क्षमता बढ़ाने के लिए उचित सुविधाएँ प्रदान कर सकें। इसलिए वर्तमान अध्ययन वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और पारिवारिक संबंधों के संबंध में उनकी शैक्षणिक उपलब्धि की जाँच कर रहा है।

मूल शब्दः प्रकाश, शिक्षार्थियों, शैक्षणिक उपलब्धि, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता

प्रस्तावना

शिक्षा उतनी ही पुरानी है जितनी कि मानव जाति और यह सभी जीवों से जुड़ी है। हर समाज में शिक्षा का प्रावधान पाया जाता है, चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक, सरल हो या जटिल। शिक्षा के बिना कोई भी समाज एक पीढ़ी से अधिक नहीं चल सकता। यह अवांछनीय प्रवृत्तियों को कम करता है और नए विचारों को जन्म देता है। शिक्षा का मुख्य कार्य मनुष्य को उसके पर्यावरण के साथ समायोजित करना माना जाता है, जिसका अर्थ है अपने और समाज के लाभ के लिए अपने परिवेश के साथ अनुकूलन और पुनर्निर्माण करना। यह एक गतिशील शक्ति है जो मानव अनुभवों का पुनर्गठन और पुनर्निर्माण करती है। यह जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने का एक प्रभावी साधन है। यह राष्ट्र के साथ–साथ व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को बढ़ाता है। यह जीवन के हर पहलू से जुड़ी समस्याओं को सुलझाने में सहायक है। यह व्यक्ति को ताकत देता है जो उसे ज्ञान प्राप्त करने और गलत और सही के बीच अंतर करने में मदद करता है।

शिक्षा को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली मानव यात्रा के नाम से जाना जाता है। यह समाज को एकीकृत एवं संगठित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, तथा व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में सहायक होती है। किसी भी राष्ट्र या समाज में जो उन्नति परिलक्षित होती है, वह उस राष्ट्र अथवा समाज की शिक्षा का प्रतिफल मानी जाती है। यह व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली साधन है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने नागरिकों के समुचित विकास के लिये शिक्षा प्रक्रिया का उपयोग करता है जिससे उसके नागरिक अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन सफलतापूर्वक कर सकें।

कोई भी राष्ट्र उस समय ही उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है जबकि उसके प्रत्येक नागरिक को यह सुविधा प्राप्त हो कि वह स्वतन्त्रता पूर्वक अपना विकास कर सकता है, क्योंकि एक राष्ट्र अथवा समाज के लिये सबसे महत्वपूर्ण साधन मानव ही माने जाते हैं। हम जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर निहित शक्तियॉ होती हैं, और जब इन शक्तियों को फलने फूलने का अवसर मिलता है तो उसका विकास उसकी क्षमता के अनुसार हो जाता है।

अतः शिक्षा को जन–जन तक पहुंचाकर ही हम राष्ट्र को सही अर्थों में शिक्षित कर सकते हैं। मात्र साक्षरता अभियान से ही

राष्ट्र को शिक्षित करने का लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिये शिक्षा का प्रकाश भारत में कुटीर तक पहुंचाने के लिए संविधान (86वां संशोधन) 2002 में भारत के संविधान में मौलिक अधिकार के रूप में संशोधन द्वारा 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने का प्रावधान किया गया है।

इस अधिनियम के लागू होने से 6 से 14 वर्ष तक के प्रत्येक बच्चे को अपने नजदीकी विद्यालय में निःशुल्क तथा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा पाने का कानूनी अधिकार मिल गया है। इस अधिनियम में गरीब परिवार के वे बच्चे जो प्राथमिक शिक्षा से वंचित हैं उन के लिये निजी विद्यालयों में 25 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान रखा गया है। प्राचीन काल में मानव समाज अति साधारण था। वह अपने अति विनम्र स्वभाव तथा अज्ञानता के कारण एवं संचार माध्यमों की कमी तथा मीडिया की अनुपलब्धता के कारण अपनी बुद्धि का विकास करने एवं उसे अन्यत्र फैलाने मे असफल रहा। लेकिन वर्तमान समय के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा पाने एवम् अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर प्रदान करता है साथ ही साधनहीन लोगो को भी शिक्षा के उच्चतम शिखर पर पहुँचने के लिए अवसर प्रदान करता है। अगर पशिचमी देशों की बात करें तों पश्चिमी देशों में विशेष रूप से मानव प्रतिभा के पूर्ण उपयोग पर बल दिया जाता है।

समस्या का औचित्य

एक शोध परियोजना का औचित्य समाज की भलाई के लिए उसके योगदान में निहित है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य यह देखना है कि वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि और उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और पारिवारिक संबंधों के बीच कोई संबंध है या नहीं। अवसरों में अपार विकास के साथ–साथ शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखना भी आवश्यक है। हमारी संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में स्कूली शिक्षा व्यक्ति के साथ–साथ राष्ट्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक अच्छा स्कूल व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। स्कूल का मुख्य उद्देश्य बच्चों में शैक्षणिक कौशल विकसित करना है। पहले के समय में, बौद्धिक और क्षमता कारकों को शैक्षणिक उपलब्धि का भविष्यवक्ता माना जाता था, लेकिन आज के परिदृश्य में केवल बुद्धिमत्ता ही शैक्षणिक उपलब्धि में सभी भिन्नताओं पर विचार नहीं करती है। यद्यपि यह शैक्षणिक उपलब्धि का सबसे प्रभावी भविष्यवक्ता है, लेकिन शोध से पता चला है कि रचनात्मकता, व्यक्तित्व, रुचि, पारिवारिक संबंध, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, चिंता आदि जैसे सामाजिक और भावनात्मक कारक भी छात्र की उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। इसलिए, शिक्षा देने से पहले शिक्षार्थी की संपूर्ण क्षमताओं और संभावनाओं को पहचानना आवश्यक है। हाल के अध्ययनों ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता की उपयोगिता पाई है जिसका अर्थ है हमारे जीवन के उन पहलुओं को नियंत्रित करने की क्षमता जो भावनाओं से जुड़े हैं। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता सकारात्मक परिणामों से संबंधित है जैसे कि सामाजिक व्यवहार, गर्मजोशी और सकारात्मक संबंध। जबकि कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता अवैध नशीली दवाओं और दोस्तों के साथ खराब संबंधों सहित नकारात्मक परिणामों से संबंधित है। जबकि सामान्य बुद्धिमत्ता जीवन में सफलता में 20: योगदान देती है, भावनात्मक बुद्धिमत्ता 80: साझा करती है।

किसी भी देश में, हर क्षेत्र में उन्नति और प्रगति उसके नागरिकों की रचनात्मक क्षमताओं पर निर्भर करती है। शोध से पता चलता है कि छात्रों की उपलब्धि, करियर की सफलता, व्यक्तिगत भलाई में रचनात्मकता का महत्व छात्रों की उपलब्धि और सफलता को बेहतर बनाने के लिए है। रचनात्मकता एक ऐसी प्रक्रिया है जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नए नवाचार और खोज लाती है। वैश्वीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति और देश के तेजी से विकास और विकास के साथ, इससे प्रभावित कोई भी कोना नहीं बचा है। हम रिश्तों में भी बदलाव महसूस कर सकते हैं जो अंततः समायोजन प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। आजकल, हम पाते हैं कि एकल परिवार की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण एक बच्चे को समाज के साथ साझा करने और समायोजन की समस्या का सामना करना पड़ता है जो किसी न किसी तरह से उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करता है और उसके आसपास के लोगों से निपटने और सफलता की सीढ़ी की ओर बढ़ने में बाधा बनता है। परिवार के पूर्ण समर्थन और सहयोग से इसे दूर किया जा सकता है। एक व्यक्ति की शैक्षिक और व्यावसायिक वृद्धि पारिवारिक वातावरण और समर्थन पर निर्भर करती है। घर में उचित और अनुकूल माहौल और माता–पिता का बच्चे के प्रति उचित व्यवहार उसकी शैक्षणिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। बच्चे अलग–अलग पारिवारिक वातावरण से आते हैं जो स्कूल में उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को अलग–अलग तरीके से प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए, वर्तमान अध्ययन अन्वेषक द्वारा वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और पारिवारिक संबंधों के संबंध में उनकी शैक्षणिक उपलब्धि की जांच करने के लिए किया गया है। इसके अलावा, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और पारिवारिक संबंधों के संबंध में उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करने के लिए कोई अध्ययन नहीं किया गया है। इसलिए वर्तमान समस्या को इस प्रकार कहा जा सकता है।

साहित्य की समीक्षा

शर्मा (2000) ने अध्ययन किया "भावनात्मक बुद्धिमत्ता जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित करने, उसे प्राप्त करने की दिशा में काम करने, बातचीत करने और उसे महसूस करने की क्षमता को संदर्भित करती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता में कई प्रमुख विशेषताएँ शामिल होती हैं, जैसे किसी भी स्थिति में आत्म–प्रेरणा और दृढ़ता, भावनाओं को प्रबंधित करने, मनोदशा को नियंत्रित करने और सहानुभूति रखने की क्षमता। काम में सफलता और दो प्रतिशत बुद्धिमत्ता भागफल पर निर्भर व्यक्ति एक सफल पेशेवर बन सकता है, लेकिन उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता के साथ कोई रोल मॉडल बन सकता है। इस प्रकार, पदोन्नति के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उच्च स्तर आवश्यक है।

ज्ञानी और कुशवाह (2001) ने अध्ययन किया "भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक प्रकार की सामाजिक बुद्धिमत्ता है जो किसी लक्ष्य को निर्धारित करने, उसे प्राप्त करने की दिशा में काम करने, उसे जन्म देने और दूसरों के प्रति सहानुभूति महसूस करने की क्षमता को संदर्भित करती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता ष्फ से अधिक महत्वपूर्ण है। ष्फ जीवन में सफलता निर्धारित करने वाले क्षेत्रों में लगभग 20: योगदान देता है। शेष 80: भावनात्मक बुद्धिमत्ता द्वारा योगदान दिया जाता है। अध्ययनों से पता चला है कि ष्फ जन्मजात है लेकिन भावनात्मक बुद्धिमत्ता वयस्कता में भी विकसित और स्वाभाविक हो सकती है और किसी के स्वास्थ्य, रिश्तों और प्रदर्शन को साबित कर सकती है। तेजी से बदलती और प्रतिस्पर्धी दुनिया में जीवित रहने के लिए हर व्यक्ति को भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करने और उसे पोषित करने की आवश्यकता है।

मूरजानी, और अन्य (2002) "एक अध्ययन किया जिसका उद्देश्य किशोर लड़की के व्यक्तित्व प्रकार की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन करना था। सभी धाराओं – कला, वाणिज्य और विज्ञान से 120 छात्राओं का एक नमूना यादृच्छिक आधार पर लिया गया

है जिसे एक मॉडरेटिंग चर के रूप में लिया गया है। 12 वीं कक्षा में 65: से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की रेटिंग करके बुद्धिमत्ता के स्तर को नियंत्रित किया जा रहा है। कला और वाणिज्य, वाणिज्य और विज्ञान में महत्वपूर्ण अंतर देखे गए। न्यूरोटिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता से नकारात्मक रूप से संबंधित हैं। गखेर (2003) ने गणितीय अवधारणाओं के अधिग्रहण पर बुद्धिमत्ता एसईएस, ग्रामीण और संस्थागत अंतर के स्तर के रूप में भावनाओं के प्रभाव का पता लगाने के लिए अध्ययन किया। स्तरीकृत नमूना 10वीं कक्षा के 300 छात्रों का था। परीक्षण के माध्यम से प्राप्त परिणामों ने सभी चरों यानी भावनात्मक बुद्धिमत्ता, एसईएस के कारण गणितीय अवधारणाओं के अधिग्रहण में महत्वपूर्ण अंतर प्रकट किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य "भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक–आर्थिक स्थिति (डब्ल्यूई), लिंग–भेद के विभिन्न स्तरों के प्रभाव का पता लगाना था।" माथुर और अन्य (2005) भावनात्मक बुद्धिमत्ता के चयनित चरों में लिंग अंतर का मूल्यांकन करते हैं जो कि आरोपण, जिम्मेदारी लेना और उच्च विद्यालय के छात्रों में शैक्षणिक उपलब्धि थे। 83 किशोरों जिनमें से 47 लड़कियां और 36 लड़के थे, का चयन 13 से 15 वर्ष की आयु के बीच, शहर के एक निम्न–मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रतिनिधित्व करने वाले एक स्थानीय पब्लिक स्कूल से किया गया था। लड़कों और लड़कियों में उपलब्धि, लड़कियों ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता के आयामों पर लिंग–भेद स्कोर किया, प्रधान, बंसल और बिस्वाल (2005) ने हाल के दिनों में, मनोवैज्ञानिकों को यह महसूस किया है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए केवल बुद्धिमत्ता ही पर्याप्त नहीं है। यह महसूस किया गया कि तर्क क्षमता, जो बुद्धिमत्ता में चिंता का केंद्र है, किसी व्यक्ति की सफलता का एकमात्र कारण नहीं है, जो अधिक मायने रखता है वह है छात्रों की रचनात्मक क्षमता, भावनात्मक कौशल और पारस्परिक कौशल। पिछले शोध बताते हैं कि व्यावसायिक जीवन में सफलता के लिए बुद्धिमत्ता भागफल जिम्मेदार नहीं है। इसका योगदान केवल 20: है और 80: योगदान भावनात्मक और सामाजिक बुद्धिमत्ता का है। यह व्यक्तिगत प्रभावशीलता थी इस धारणा के साथ कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तिगत प्रभावशीलता के बीच संबंधों का अध्ययन करने के लिए यह शोध किया गया था। यह अध्ययन दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के 50 स्नातकोत्तर (25 पुरुष, 25 महिला) पर किया गया था

अध्ययन के उद्देश्य

- शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि की उनकी निम्न और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में तुलना करना।
- ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना उनकी निम्न और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में अध्ययन करना।

शोध पद्धति

वर्तमान अध्ययन अतीत से नहीं संबंधित है, न ही इस बात से संबंधित है कि कुछ चरों को बदलने से क्या होगा; इसलिए, यह ऐतिहासिक या प्रायोगिक तरीकों का उपयोग नहीं करता है। वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ता ने वर्णनात्मक सर्वेक्षण का उपयोग किया है। यह शोध की वर्तमान स्थिति बताता है, जो इसे शैक्षिक अनुसंधान में महत्वपूर्ण मानता है। हालाँकि, इस तरह का अध्ययन स्थानीय मुद्दों को हल करने में मदद करता है और कभी–कभी अधिक मौलिक शोध का आधार बनाने के लिए डेटा प्रदान करता है।

वर्णनात्मक अध्ययन की जटिलता बहुत अलग है। कुल मिलाकर, वे स्थानीय समस्याओं का अध्ययन करने के लिए घटनाओं की आवृत्ति गणना करते हैं, बिना किसी महत्वपूर्ण शोध उद्देश्य के। दूसरे स्तर पर, वे घटनाओं के बीच महत्वपूर्ण संबंधों को खोजने की कोशिश करते हैं। एक साधारण प्रश्नावली द्वारा किसी मुद्दे के बारे में व्यक्तियों की राय के संदर्भ में जानकारी एकत्र करना इस प्रक्रिया की स्पष्ट आसानी और दिशाओं के कारण संभव है।

वर्तमान अध्ययन में दो प्रकार के चर शामिल थेः आश्रित चर और स्वतंत्र चर।

- **आश्रित चरः** स्वतंत्र चर को आरंभ, त्याग या संशोधित करने पर घटित होने वाली स्थिति या विशेषता को आश्रित चर कहा जाता था। इस अध्ययन में शैक्षणिक उपलब्धि को आश्रित चर माना गया था।
- **स्वतंत्र चरः** परिस्थितियाँ या लक्षण जिन्हें अन्वेषक ने देखा या नियंत्रित किया कि वे घटनाओं से कैसे जुड़े हैं। अध्ययन के स्वतंत्र चरों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और पारिवारिक संबंध शामिल थे।

जनसंख्या पूरा समूह है जिससे नमूना लिया गया है। शोध में जनसंख्या शब्द को लोगों की आबादी के रूप में अधिक व्यापक अर्थ में प्रयोग किया जाता है। जनसंख्या में व्यक्ति, वस्तु, गुण, व्यक्तित्व, परिवार, शहर आदि शामिल हो सकते हैं। इनमें से किसी का भी एक सुपरिभाषित समूह जनसंख्या है। सक्षित जनसंख्या उन विषयों का समूह है जिनके बारे में शोधकर्ता अनुभव से कुछ जानने की कोशिश कर रहे हैं। वर्तमान अध्ययन में उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद रामनगर, अल्मोड़ा से संबद्ध निजी और सरकारी स्कूलों के सभी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी शामिल हैं।

उस पूरे समूह से लिया गया नमूना अध्ययन का उपसमूह है। दूसरे शब्दों में, यह एक बड़े समूह का एक छोटा सा चित्रण है। पूरी आबादी को किसी भी वैज्ञानिक घटना में एकजुट करना कठिन होगा। विशेष उद्देश्यों के लिए चुनी गई पूरी जनसंख्या का एक छोटा सा हिस्सा नमूना है। वर्तमान अध्ययन में प्रत्येक व्यक्ति के अंतिम नमूने में चुने जाने की समान संभावना थी, इसलिए सरल यादृच्छिक नमूनाकरण का उपयोग किया गया था। वर्तमान अध्ययन में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के 600 विद्यार्थीयों को विषय के रूप में शामिल किया गया था । इस अध्ययन में उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद, रामनगर से 16 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों को शामिल किया गया था। अध्ययन में उत्तराखण्ड राज्य के दो जिले अल्मोड़ा और नैनीताल शामिल थे।

परिणाम एवं डेटा व्याख्या

तालिका 1: निम्न और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर के लिए 'टी' मान

ग्रुप	एन	औसत	एस.डी.	'टी' मान
कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता	600	51.20	6.41	22.761**
उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता	600	72.01	6.47	

''0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक।

तालिका 1 से पता चलता है कि निम्न और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच 'ज' मान ('टी' = 22.761) 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसलिए, पहले तैयार की गई शून्य परिकल्पना, "उच्च और निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" को खारिज

कर दिया जाता है। इससे पता चलता है कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले छात्रों की कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले छात्रों की तुलना में बेहतर शैक्षणिक उपलब्धि होती है। माध्य के संदर्भ में, यह देखा जा सकता है कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का माध्य स्कोर यानी 72.01, निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के माध्य स्कोर यानी 51.20 से अधिक है। माध्य स्कोर में अंतर छात्रों के बीच अलग–अलग भावनात्मक बुद्धिमत्ता क्षमताओं के कारण हो सकता है। वे छात्र जिनके पास उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता है, वे अपनी भावनाओं के साथ–साथ दूसरों की भावनाओं को भी उचित तरीके से समझने और प्रबंधित करने में सक्षम हैं। वे यह भेद करने में सक्षम हैं कि उन्हें अपनी भावनाओं को कहाँ दिखाना है और कहाँ नहीं दिखाना है। अपनी भावनाओं को प्रबंधित करके वे विभिन्न परिस्थितियों में खुद को समायोजित करने में सक्षम होते हैं और जीवन के हर क्षेत्र में उन लोगों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते हैं जिनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता कम होती है।

पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि उनकी कम और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में

पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच उनके कम और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में अंतर की तुलना करने के उद्देश्य से निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ तैयार की गई थीं:

पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में उनके उच्च और निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

निम्न और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का औसत और 'टी' स्कोर तालिका 2 में दिया गया है।

तालिका 2: निम्न और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर के लिए 'टी' मान

ग्रुप	एन	औसत	एस.डी.	'टी' मान
कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता	150	49.05	6.51	13.776**
उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता	150	60.50	5.43	

''0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक।

तालिका 2 से पता चलता है कि कम और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच 'टी' मान ('टी' = 13.776) 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसलिए, पहले तैयार की गई शून्य परिकल्पना, "उच्च और निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" को खारिज कर दिया जाता है।

महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि उनकी कम और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में

महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि और उनकी कम और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच अंतर की तुलना करने के उद्देश्य से निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ तैयार की गई हैं:

महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि और उनकी कम और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है

कम और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाली महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं का औसत और 'टी' स्कोर तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 3: कम और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाली महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर के लिए 'टी' मान

ग्रुप	एन	औसत	एस.डी.	'टी' मान
कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता	150	63.40	5.23	14.662**
उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता	150	75.00	6..06	

''0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक।

तालिका 3 से पता चलता है कि निम्न और उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाली महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के बीच 'ज' मान ('टी' = 14.662) 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसलिए, पहले तैयार की गई शून्य परिकल्पना, "उच्च और निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" को अस्वीकार कर दिया जाता है। इससे पता चलता है कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाली छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाली छात्राओं की तुलना में बेहतर है। माध्य के संदर्भ में, यह देखा जा सकता है कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाली महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं का औसत स्कोर यानी 75.00, कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाली महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के औसत स्कोर यानी 63.40 से अधिक है। यह दर्शाता है कि बेहतर प्रदर्शन करने वाली छात्राओं का अपनी भावनाओं पर नियंत्रण होता है। वे अपनी भावनाओं और भावनाओं को प्रबंधित करने में सक्षम होती हैं ताकि वे अपने जीवन में किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए समय पर उचित निर्णय ले सकें। वे आसानी से अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकती हैं और दूसरों का दिल जीत सकती हैं। यह विशेषता उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में उन महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की तुलना में अधिक हासिल करने में मदद करती है जिनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता कम है।

निष्कर्ष

अनेक बाधाओं को दूर करने के बाद, अन्वेषक उस मंजिल पर पहुँच गया है जहाँ वह निष्कर्ष के रूप में अपने अध्ययन के महत्व को साबित कर सकता है। वर्तमान अध्याय में जाँच से प्राप्त निष्कर्षों को व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन के निष्कर्ष और निहितार्थ अध्ययन के सभी क्षेत्रों में फिट नहीं बैठते हैं, इसलिए आगे के शोध के लिए सुझाव दिए गए हैं। अध्याय में शैक्षिक निहितार्थ, वर्तमान अध्ययन की सीमाएँ और साथ ही भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और पारिवारिक संबंधों के क्षेत्र में आगे के शोध के लिए सुझाव भी शामिल हैं।

शिक्षा उतनी ही पुरानी है जितनी कि मानव जाति और यह सभी जीवों की चिंता का विषय है। हर समाज में शिक्षा का प्रावधान पाया जाता है, चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक, सरल हो या जटिल। शिक्षा के बिना कोई भी समाज एक पीढ़ी से अधिक नहीं चल सकता। यह अवांछनीय प्रवृत्तियों को कम करता है और नए विचारों को जन्म देता है। शिक्षा का मुख्य कार्य मनुष्य को उसके पर्यावरण के साथ समायोजित करना माना जाता है, जिसका अर्थ है अपने और समाज के लाभ के लिए अपने परिवेश के साथ अनुकूलन और पुनर्निर्माण करना। यह एक गतिशील शक्ति है जो मानव अनुभवों का पुनर्गठन और पुनर्निर्माण करती है। यह जीवन

की गुणवत्ता में सुधार करने में एक प्रभावी उपकरण है। यह राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ व्यक्ति के व्यक्तित्व को भी निखारता है। यह जीवन के हर पहलू से जुड़ी समस्याओं को सुलझाने में सहायक है। यह व्यक्ति को ताकत देता है जो उसे ज्ञान प्राप्त करने और गलत और सही के बीच अंतर करने में मदद करता है।

सन्दर्भ

1. बेघेट्टो, आर. ए, कॉफिमन जे. सी. रचनात्मकता के लिए कक्षा संदर्भ। उच्च क्षमता अध्ययन. 2014;25:53-79.
2. बेघेट्टो, आर. ए. क्या रचनात्मकता का कक्षा चर्चाओं में कोई स्थान है? भावी शिक्षक की प्रतिक्रिया प्राथमिकताएँ। सोच कौशल और रचनात्मकता. 2007;2:1-9.
3. बेनेडेक एम, कोनेन टी, न्यूबॉयर ए. सी. रचनात्मकता के अंतर्गत सहयोगी क्षमताएँ। मनोविज्ञान या सौंदर्यबोध, रचनात्मकता और कला. 2012;3:273-281.
4. बेंटली, जे.सी. रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि. जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च. 1996;59:269–272.
5. बेरेट डी. रचनात्मकताः सामान्य पाठ्यक्रम के लिए एक उपाय. क्रॉनिकल ऑफ हायर एजुकेशन, 2013.
6. बेस्ट जे. डब्ल्यू. और काहन, वी.वी. (1998). शिक्षा में अनुसंधान (6वां संस्करण), नई दिल्ली, एनसीईआरटी, खंड, 1998, 1–2.
7. भदौरिया पी. छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका. रिसर्च जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइंस. 2013;1(2):8–12.
8. भार्गव, महेश, अरोड़ा एच. पी. माता–पिता के व्यवहार की गतिशीलता. आगराः सरोज भार्गव बुक होम।, 2005.
9. भटनागर ए. बी, भटनागर एम. उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान। मेरठः इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।, 2006.
10. चड्ढा एन. के. रचनात्मकता में परिप्रेक्ष्य। नई दिल्लीः ईएसएस प्रकाशन।, 1984.
11. चामुंडेश्वरी एस. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि। अर्थशास्त्र और प्रबंधन विज्ञान में अकादमिक अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. 2013;2(4):178–187.
12. चौधरी, विनीता. रचनात्मकता पर शैक्षणिक उपलब्धि का प्रभाव। इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन, 2008, 39(2).
13. चौहान एस, शर्मा ए. लिंग दोनों में सार्वजनिक और निजी स्कूल के छात्रों के बीच रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट।. 2017;6(1):39–45.
14. चौहान एस. एस. उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान. नोएडाः विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, 2007.
15. सियारोची जे, चैन ए. वाई. सी, बजगर जे. किशोरों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को मापना. व्यक्तित्व और व्यक्तिगत अंतर. 2001;31:1105–1119.
16. क्लेग ए. ए. जूनियर. व्याख्यान में कक्षा के प्रश्न.सी. डेइटन, (सं.) द इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन, खंड 2, न्यूयॉर्कः मैकमिलन, 1971.
17. क्रोजियर जी. माता–पिता और स्कूलः भागीदारी या निगरानी? जर्नल ऑफ एजुकेशन पॉलिसी. 1998;13(1):125–136.
18. डे ए. एल, कैरोल एस. ए. भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) का दिखावा करनाः क्षमता और विशेषता–आधारित ईआई उपायों पर प्रतिक्रिया विकृति की तुलना करना। जर्नल ऑफ़ ऑर्गनाइज़ेशनल बिहेवियर. 2008;29(6):761–784.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.